सामाजिक संस्था संपूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

उच्चतम न्यायालय के निर्णय पर भरोसा रखें

नारी का अपमान.....देश का अपमान है

-डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका, सम्पूर्णा

टीवी पर डिबेट तो आपने सुनी ही होगी। मेरे इन दो शब्दों से ही, आपके चेहरे पर मुस्कान सी आ गई है, क्योंकि इतना हाई पॉवर ड्रामा तो शायद किसी अत्यंत सनसनी खेज सीरियल में भी नहीं होगा। तर्क और वितर्क से बोलने वाला, बोलता रहता है, कई बार नाट्य शास्त्र के रस, क्रोध को प्रकट करता है तो कभी विस्मय को, कभी हास्य रस, तो कभी सोम्य भी बन जाता है। एंकर की तो पूछिए ही मत, उसके जितनी कलाकारी तो शायद फिल्म के किसी भी कलाकार के पास नहीं होती। कुल मिलाकर टीवी डिबेट, मनोरंजन का विषय बन चुकी है।

इसी टीवी डिबेट पर भाजपा की प्रवक्ता, जो निष्कासित हो गईं हैं, किसी किताब का जिक्र करते हुए भावावेश में आकर जो नहीं कहना था, बोल गईं। लेकिन पिछले शुक्रवार को देश की सड़कों पर दंगाइयों ने होश हवाश में जो ताण्डव किया, वह माफी लायक नहीं है। देश की संपत्ति को नुकसान पहुंचाना और राह चलते समान्य नागरिकों को पत्थर मारना, किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। हद तो जब हो जाती है जब छोटे-छोटे बच्चे, जिनको शायद विषय से कुछ लेना देना नहीं होता, वे इस पत्थरबाजी में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि उनकी माएं उनको सड़कों पर उपद्रव करने के लिए क्यों भेज देती हैं? यह सर्वथा अनुचित है। इन बच्चों को इस समय स्कूल ही जाना चाहिए। यह ताण्डव सभी देशवासियों को कंपित करता है।

जब पूरे विश्व में, भारत माता के सपूत हमसब के प्रिय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का डंका बज रहा है, ऐसे में मुट्ठीभर उपद्रवी बिना किसी विषय को जाने सड़कों को घेरते हैं, पत्थरबाजी करते हैं और एक महिला पर बुरी-बुरी अभद्र फब्तियां कसते हैं। अगर नूपुर शर्मा ने गलत कहा है तो माननीया न्यायालय इस बारे में फैसला लेगी। लेकिन समस्त स्त्री जाति को अपमानित करते हुए एक लड़की को अपशब्द कहना, हमारी संस्कृति नहीं है।

सत्य तो केवल इतना है कि वह एक राजनैतिक पार्टी की प्रवक्ता थी और पार्टी ने उनको निष्कासित कर दिया। किंतु सामूहिक रूप से प्रत्यक्ष और सोशल मीडिया के माध्यम से अप्रत्यक्ष में बहन नूपुर को जिस तरीके से अपमानित किया जा रहा है, वह समस्त स्त्री जाति का घोर अपमान है। यह घोर अपमान और चारित्रिक हिंसा, नारी और प्रकृत्ति दोनों को ही विकृति करने वाला है। सभ्य समाज इसकी घोर शब्दों में निंदा करता है। उच्चतम न्यायालय के फैसले का हमें इंतजार करना चाहिए। अपने बच्चों को पढ़ने और सबके सम्मान का पाठ पढ़ाना चाहिए। कट्टरपंथी विचारधारा किसी का विनाश करती है तो वह नवयुवकों

और बच्चों का। ऐसे में मांओं को दूर हो जाना चाहिए। इस तरह की कट्टरपंथी विचारधारा बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए घातक है।

वे बच्चे जो आज स्कूल छोड़कर पत्थर उठा रहे हैं, कल बड़े होकर देश के दुश्मन भी बन सकते हैं। मेरी सभी बहनों से अपील है कि चाहें वह किसी भी धर्म, मजहब और जाति को मानने वाली हों, किसी भी लड़की के प्रति अपमानजनक भाषा, हिन्दुस्तान की संस्कृति नहीं है। इस देश ने राम को श्राप देकर, 14 वर्ष वनवास भेजने वाली मां कैकई को भी कभी अपमानजनक शब्दों से संबोधित नहीं किया। यहां तक कि ताड़का, शूर्पणखा और मंथरा जैसे चरित्रों पर भी सदैव अच्छे शब्दों का प्रयोग किया है। हमारी अपनी बहन नूपुर शर्मा, जो एक पढ़े लिखे परिवार से आती हैं और पेशे से वकील हैं, उनके लिए अमर्यादित शब्दों का प्रयोग ठीक नहीं है। सम्पूर्णा संस्था इसकी पूर्ण रूप से भर्त्सना करती है।

समाज में वैमन्स्य फैलाने वाली सभी संस्थाओं को अनुरोध करती है कि नारी और प्रकृत्ति का अपमान भी भारी पड़ सकता है। जरा सोचिए। पुलिस अपना काम कर रही है। कोर्ट जो फैसला सुनाएगी वह सबको स्वीकार्य होगा किंतु यह तालीबान नहीं हिन्दुस्तान है, जहां स्त्री को हमेशा से ही पूजा जाता है। विकृत्त मानसिकता भारतीय संस्कृति को डरा नहीं सकती। आपसे केवल यही अनुरोध है कि मेरी सभी बहनें अपने बच्चों को स्त्री के लिए उचित शब्दों का प्रयोग करना सिखाएं अन्यथा यह सृष्टि मानव के रहने लायक नहीं रहेगी।

.....